AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (E):2583:1348, ISSN(P): 2582:8800 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 01| January 2022| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 13-16

चाँदागढ का राज्य और उनके जमिनदार – सामाजिक स्थैतिक अध्ययन

Mr. Prashant Wankhede
Assistant Professor
Department of Social Science
Raje Dharmarao Art, Science and Commerce Mahavidyalaya Gadchiroli, M.S

सारांश:

इ.स 870 में कागजनगर के सिरपुर से सरदार भिमबल्लाळ सिंह आत्राम ने गोंड राज्य की शुरुआत की। इ.स 870 में उन्होंने यादव वंश के राजा को हराकर गोंड राज्य की स्थापना की थी। उसके बाद गोंड राजा ने वर्धा नदी के तट पर अपनी सिरपुर की राजधानी स्थापित की। उसके उन्होने नई राजधानी बनाई उसे गोंड राजा बल्लाळशाह के नाम पर स्थापित किया गया। इ.स. 970 से 995 के अपने कार्यकाल में बल्लाळशाह राजधानी को उत्तर की ओर 15 कि.मी. पर ऊंचे पहाड़ी पर इस बल्लरशाह राजधानी को तीसरी जगह पर स्थानांतरीत किया गया। नया किला बनाकर उसे नई तीसरी राजधानी बनाई गई। यह तीसरी राजधानी खरगोश के माथे पर दिखाई दिये चाँद के नाम पर चांदागढ़ रखा गया।

प्रस्तावना:

गोंडराजा खांडक्या बल्लाळशाह आत्राम राजा और उसके बाद तीन पिढीयों ने चांदागढ़ के विशाल 8 कि.मी. परीघ के किले का निर्माण किया। उन्होंने उसे चांदागढ़ नाम दिया चांदागढ़, बल्लाळशाह गढ़, सिरपुरगढ़ यहां पर जितने गोंड राजा हुए हैं और वर्तमान के चांदागढ़ (चंद्रपूर) के राजा डॉ.बिरशहा आत्राम मूलतः तेलंगाना प्रांत से होने से वे तेलुगु समाज से ज्यादा संबंधित रहे हैं। इसीलिए चांदागढ़ (चंद्रपुर) के गोंड राज्य के जमींदार ज्यादातर तेलंगाना में पाए जाते हैं।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Mr. Prashant Wankhede Assistant Professor Department of Social Science Raje Dharmarao Art, Science and Commerce Mahavidyalaya Gadchiroli, M.S Email: prashatss1988@gmail.com	

चांदागढ़ के गोंड राजाओं का राज्य वरंगल, करीमनगर, शिरपुर, भोपालपटनम, आसिफाबाद (जुनगांव मोहाड़), अदिलाबाद, यवतमाल के माहूरगढ़, अमरावती के गाविलगढ़, अकोला के नरनालागढ़, पश्चिमी अरबी समुद्र के पास कई प्रांतों पर चांदागढ का राज्य रहा है।

इ.स. 1818 में अंग्रेज सरकार के साथ गोंड राजाओं का युद्ध हुआ और चांदागढ़ (चंद्रपुर) का गोंड राजाओं का राज्य समाप्त हुआ फिर भी गोंड समाज के परंपरा से गोंड राजपरिवार के बुजुर्ग की गोंड राजपद पर दीक्षा की जाती है। इसीलिए वर्तमान के गोंड राजा चांदागढ़ उर्फ चंद्रपुर के अंतर्गत जितने पुराने जमींदार है उनकी साल में एक बार मुलाकात लेते है। कुछ बड़े जमींदार भारत स्वतंत्र होने के बाद अपने आप को गोंड राजा के रूप में मानने लगे हैं।

विश्लेषनः

चंद्रपुर-गढ़चिरौली के 2 जमींदार और तेलंगाना के 17 जमींदार चांदागढ़ के गोंड राजा डॉ.बिरशहा आत्राम के अधीन है। वह वर्तमान के गोंड राजा डॉ.बिरशहा आत्राम को बड़ा सम्मान और आदर देते हैं। इ.स.1983 में यादवशाह राजा आत्राम के देहांत के बाद सन 14 दिसंबर 1991, को वर्तमान के गोंड राजा डॉ.बिरशहा आत्राम की गोंड समाज के 47 शाखाओं के प्रमुख, जिला कलेक्टर, उपजिला कलेक्टर, मंत्री महोदय, आमदार, तहसीलदार तथा सभी जमींदारों के सामने वरोरा शहर में चांदागढ़ के राजगद्दी पर दीक्षा समारंभ करके बिठाया गया इस पर समाज द्वारा और मान्यवरों द्वारा सम्मान पत्र देकर राजा डॉ.बिरशहा आत्राम को चांदागढ़ (चंद्रपुर) का राजा घोषित किया गया। राजा डॉ.बिरशहा आत्राम यह चांदागढ़ के आत्राम राजवंश में पैदा हुए और उनके पिताजी, नानाजी भी चांदागढ़ के गोंड राजा इतिहास में रहे हैं। इसीलिए उन्हें अपने तेलुगु, गोंड, परधान, थोटी, माडीया आदी गोंड समाज से बहुत लगाव है। इसीलिए वह हर साल तेलंगाना में आकर अपने रिश्तेदारों को मिलते हैं और तेलंगाना के साथ अन्य प्रांतों के जमींदार तथा चांदा के जमींदार उनके निवास राजवाड़ा में उनकी मुलाकात लेकर सलाह मशवरा करते हैं। नक्शा में देखिए चांदागढ (चंद्रपुर) का प्राचीन गोंड राज्य दिखाया है। गढ़ामंडला से लेकर देवगढ़, बस्तर, खेरला, चांदागढ के प्राचीन दस्तावेज वर्तमान के चांदागढ (चंद्रपुर) के राजा डॉ.बिरशहा आत्राम के पास है वही सच्चे गोंड राजवंश के राजा है।

आत्राम जगपतराव यह चांदागढ़ के गोंडराजा कैसरशाहा आत्राम से ज्यादा घनिष्ठ संबंध रखता था। इ.स.1790 जगपतराव आत्राम का घराना मदुरा और डोरली से संबंधित था। इसारी जंगूबापू इन्हें चार बीवियां थी और ढेर सारे बच्चे भी। उनका दूसरा बड़ा बेटा लिंगा हनुमंतराव था। वह उटनूर में आकर रहने लगा। उन्होंने वहां अपना मकान बनाया उन्होंने

Vol-3, Issue-1, Jan 2022, **ISSN (E): 2583:1348, (P):2582:8800**
AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social science

छोटा किला बनाया। वह अमलदार का काम देखता था जैसे जिला अधिकारी के रूप में। लक्काराम, गंगापेट, जनाराम, पेरसा, कोईतूर और पामेलावारा यह ग्राम 30 साल के लीज पर दिए गए थे। उपजमींदार के रूप में आत्राम जगपतराव जमींदार अपनी जमीनदारी में ऐशाआराम से किले में रहता था। (लखाराम) इ.स. 1841 से 1851 चांदागढ़ के गोंडराजा कैसरशाहा आत्राम द्वारा उपजमीनदारी के अधिकार जगपतराव आत्राम उटनूर को चांदागढ दरबार से दिए गए। उस समय के सीतागोंडीकर जमींदार भी चांदागढ़ से परवाना प्राप्त कर चुके थे। वह मुस्लिम नवाबों जैसा वस्त्र पहनते थे। चांदागढ़ के गोंड राजा भी मुसलमान बादशाह जैसे कपड़े पहनते थे। आत्राम जगपतराव अपने किले में दरबार लगाया करते थे। वह

गोंड समाज में ज्यादा उठते बैठते नहीं थे। वे ज्यादा स्वतंत्रता से मिलते नहीं थे। उनकी मृत्यु इ.स. 1851 में हुई। आत्राम जगपतराव का बेटा देवशाह व नए पंचायत राज में चुनकर आए। पंचायत समिति में और गांव के कांग्रेस पार्टी में भी विधायक के सीट के लिए वे कांग्रेस के प्रतिनिधि चुने गए। उटनूर चुनाव क्षेत्र यह शेड्यूल ट्राइब के लिए आरक्षित रहा और वहां से वे विधायक चुनकर आए। उर्दू और अंग्रेजी में पढ़ाई करने से वे अपने चुनावक्षेत्र में अपना अच्छा प्रभाव डालने में सफल हुए। देवशाहा आत्राम (आमदार) और भगवंतराव ये अपनी मां के बहना से हुऐ बेटे ऐसे संबंध थे। दोनों बहनों के बेटे कहे जाते थे। दोनों आपस में राजकीय विभिन्नता से आपस में सहकार्य नहीं करते थे। आंध्रप्रदेश के दूसरे लेजिसलेटिव सन 1977 मे कोटनाका भीमराव हुए। वे मोकाशी परिवार आदिलाबाद से थे। उनकी शिक्षा अच्छी थी। देवशाह एक बार फिर ट्राईबल वेलफेयर मिनिस्टर बने। उन्होंने राजनिती से दूर रहना पसंद किया। आत्राम देवशाह के बेटे और बेटियां हैं।

निष्कर्ष:

वर्तमान में गोंड कम्युनिटी के रीति-रिवाज से आत्राम सुधाकर समाज प्रमुख राजा के रूप में अपने पिता के मृत्यु के बाद राजगद्दी पर बैठे हैं। आत्राम सुधाकर चांदागढ़ (चंद्रपुर, महाराष्ट्र) के गोंडराजा डॉ. बिरशहा आत्राम से संबंधित है। वर्तमान चांदागढ़ के गोंडराजा डॉ. बिरशाहा आत्राम आसिफाबाद, आदिलाबाद, शिरपुर, वारंगल, करीमनगर के सभी मोकासदार, जमीनदार, उपजमींदार, काठी और काठोडा के साथ सामाजिक व्यवहार अच्छे रखते हैं। वे गोंड, राजगोंड, माडिया, परधान, कोलाम इत्यादि सभी गोंडो से राजा के रूप में समान रूप से महत्वपूर्ण संबंध रखते हैं। हर साल एक बार चांदागढ के गोंडराजा अपने लोगों से मिलकर सभी की जानकारी लेते हैं इसलिए सभी उन्हें बहुत चाहते हैं।

संदर्भ:

1) Pal, K. (2017), Gond janjati: Ek Samanya Parichay. International journal of Advanced research and Development, 2(3), 246-249.

2) Shastri, L. & Santosh, I. (2019) Bilaspur me anushuchit janjati ke samajik-arthik sthiti ka aanklan. Research review International Journal of Multidisciplinary, 4(6), 980-983.

3) Madavi, A. (2020), Gadchiroli Jilyatil Adivasi Samajachya (Madia Gond) Samajaik Va Arthik Sthiticha Abhyas (Master's Thesis). SRTM University, Nanded. India.

4) Kumar, A. (2019), Adivasi Samaj Ke Swasth ke Prati Bhartiya Loktantra ka Drushtikon. Review Research Journal for all subject, 8(7), 1-8

5) https://maharashtratimes.com/editorial/article/adivasi-din/articleshow/53605479.cms

6) https://trti.maharashtra.gov.in/images/statisticalreports/Mada%2520Pockets_Chandrapur.pdf

■ ■ ■